ग़ज़ल 17

-रविशंकर श्रीवास्तव

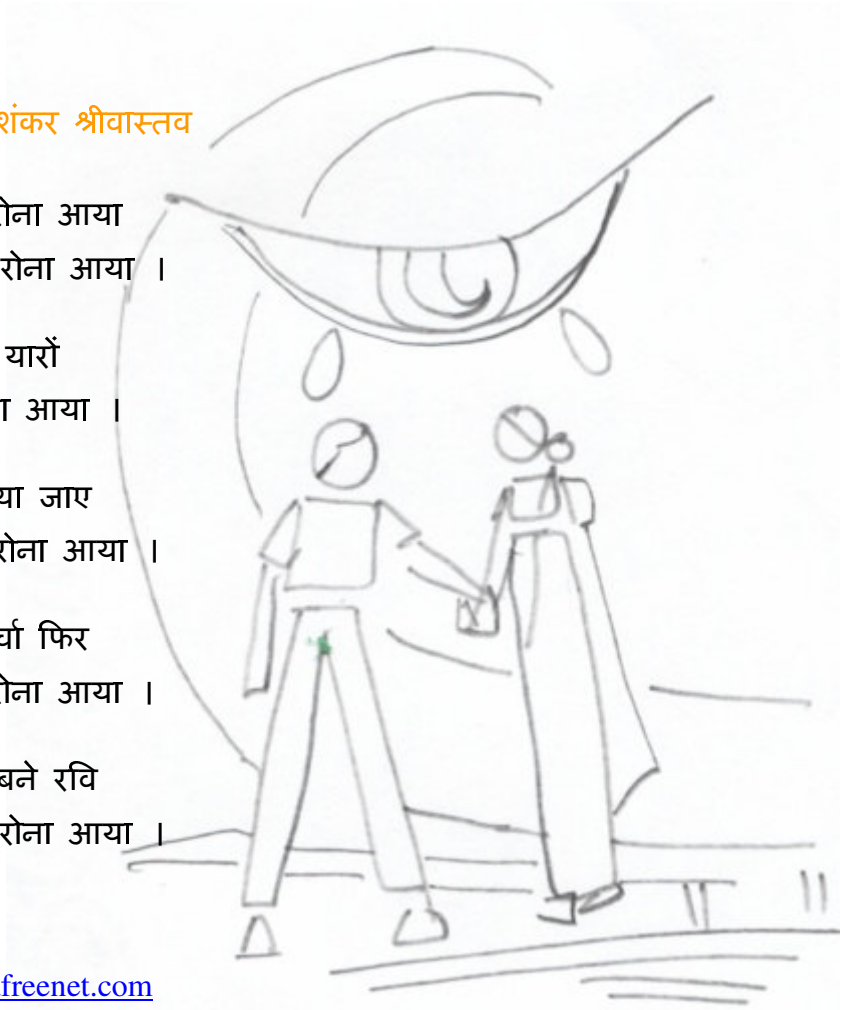

पूछते हो क्यों हमें रोना आया
बेदर्द जमाने पे हमें रोना आया ।

कोई तो ज़हर दे दो यारों
जाम पी के हमें रोना आया ।

इन चरागों को बुझाया जाए
रौशनी देख के हमें रोना आया ।

बस करो छेड़ो न चर्चा फिर
उनकी बात पे हमें रोना आया ।

के कहकहे लगाए सबने रवि
सुनके जो बात हमें रोना आया ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001